हिंसा प्रलोभन के साथ चलती है : आचार्य महाप्रज्ञ

बीदासर, 26 मार्च।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने प्रदेशी राजा और केशी स्वामी के संवाद पर आधारित कथा का वाचन करते फरमाया कि ''जब प्रदेशी राजा अपने परिवार साथियों को कहा कि मैंने केशी स्वामी के सिद्धांतों को समझ लियाहै। आज मैंने आज तक तुम्हें जो समझाया वह स्थूल जगत की बात थी। मेरे तर्क भी स्थूल थे। मेरा दृष्टिकोण भी स्थूल था। मैंने कभी सूक्ष्म की ओर ध्यान नहीं दिया और यह कल्पना भी नहीं की कि स्थूल जगत से परे सूक्ष्म जगत भी है अब मैंने सूक्ष्म जगत को जान लिया है और अब इस बात पर आ गया हूं कि 'शरीर अलग है आत्मा अलग है'। मैंने यह स्वीकार कर लिया। मैं चाहता हूं आप भी इस बात को स्वीकार कर लें। जिस प्रदेशी राजा का हाथ रक्त से भरा हुआ रहता था, रक्त ही उनका श्रृंगार बना हुआ था और आज वह अहिंसा की बात कह रहा है कि हिंसा मत करो। जब प्रदेशी बदल गया तो उसको देखकर दूसरों के मन भी बदल गये।''

आचार्यप्रवर फरमाया कि आदमी में हिंसा के संस्कार होते हैं फिर यदि कोई समर्थन मिल जाए, उत्तेजना मिल जाए, हिंसा का लाभ बता दे तो फिर हिंसा करने में व्यक्ति संकोच नहीं करता। आज भी बहुत सारे जो लोग हिंसा में आते हैं, आतंक फैलाते हैं उन्हें ऐसा ही पाठ पढ़ाया जाता होगा कि अगर मारने में सफल हो गये तो तुम्हारी यशोगाथा गाई जाएगी, मर जाओगे तो चिंता की बात नहीं भगवान तुम्हें वह स्थान देगा कि वह तुम्हें अपने स्थान पर बिठा देगा, आज भी यह पाठ पढ़ाया जाता है क्योंकि बिना आकर्षण के कोई हिंसा नहीं कर सकता। हिंसा का पाठ भी आकर्षण के साथ पढ़ाया जाता है कि हिंसा करने में लाभ कितना है। हर आदमी कार्य के पीछे लाभ–अलाभ देखता है कि मैं जो काम कर रहा हूं कितना नफा होगा कितना नुकशान होगा। इनके आधार पर वह काम करता है। बहुत सारी हिंसा प्रलोभन के साथ चलती है या मन में बड़प्पन की भावना जाग जाती है, प्रसिद्धि की भावना के कारण हिंसा करता है। इसलिए आवश्यक है कि व्यक्ति अपने चित्त को बदले और अहिंसा की ओर आगे बढ़े जिससे समाज और स्वयं का कल्याण हो सकता है।

युवाचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि धर्म के क्षेत्र में भी युद्ध को अपेक्षित कहा गया है जिसका आत्मशत्रुओं के साथ युद्ध करने का निर्देश अध्यात्म के क्षेत्र में मिलता है मनुष्य के जीवन में युवाअवस्था है तब तक आत्मशत्रुओं के साथ साधना कर लेनी चाहिए अर्थात जब तक युवाअवस्था तब तक व्यक्ति को धर्म की साधना कर लेनी चाहिए। जिससे व्यक्ति के भीतर की चेतना निर्मल बन सकती है।

– अशोक सियोल